उपसंहार

उपसंहार

नाटक एक ऐसी विधा है, जो अपने दृश्यत्व के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से अलग हैं । नाटक अपने दृश्यत्व के कारण दर्शकों के लिए अधिकरमणीय, मनोरंजक और आस्वादय होता है । उपन्यास, कहानी, जैसी रचनाओं में रचनाकार जो कहता है, इसे नाटककार अपने नाटक में प्रेक्षकों के संमुख रंगमंचपर उपस्थित कर सकता है । यही कारण है कि नाटक को 'दृश्यकाव्य' कहा जाता है और 'काव्येष्यु' 'नाटकम् रम्यम्' ऐसा माना जाता है ।

शर्माजी के 'चिराग़ की लौं', अँधेरे का बेटा' और 'न धर्म, न ईमान' आदर्शवादी नाटक हैं । इन नाटकों की कथावस्तु सरल स्पष्ट और रंगमंचीयता की दृष्टि से विकसित हुयी हैं । उनका 'चिराग़ की लौं' का कथानक सामाजिक स्थिति की वह काली तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसके दृश्य काला-बाजार, भ्रष्टाचार और अनैतिकता की स्याही सं रंगे हुये हैं । साथ ही यह प्रेम की उस खोखलें आदर्श को प्रस्तुत करता है, जो यथार्थता की निर्मम थपड़े खाकर कच्चे शीशे के भाँति चूर-चूर हो जाता है । प्रस्तुत नाटक स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है । आज समाज में स्वार्थ सिद्धि के पीछे भागते लोगों का सिद्धांत हीन जीवन देखने को मिलता है । घूसखोरी, काला-बाजार तथा बेरोजगारी ने देश को आर्थिक ढाँचे को बुरी तरह झकझोर कर खर दिया है । छोटे से छोटे क्लर्क से लेकर बड़े - बड़े अफ़सरोंतक सारे गैर कानूनी कार्य करके वैभवपूर्ण जीवन के लिए संपत्ति जूटा रहे हैं ।

वर्तमान युग में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ भ्रष्टाचार दिखाई नहीं देता । जिन अधिकारियों की नियुक्ति भ्रष्टाचार रोकने के लिए की जाती है, वे ही लोगों से रिश्वत लेकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं । आज चारों तरफ भ्रष्टाचार होने का प्रमुख कारण है - सरकारी कर्मचारियों की रिश्वत लेकर या भ्रष्टाचार करके भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने की महत्त्वाकांक्षा ।

प्रस्तुत नाटकद्वारा नाटककार ने दिखाया है कि आज के इस भौतिकवादी युग में नैतिक पतन के कारण ईमानदारी से आदर्श मूल्यों को लेकर जीना कठिन कार्य हो गया है और विशेष कठिनाई उस समय होती है,

जब कोई पत्नी ही अपने पति को अनैतिक कार्य करने को प्रेरित करती है । ऐसी स्थिति में चारित्रवान व्यक्ति के लिए पत्नी का साहचर्य छोड़ना आसान है, सिद्धांत ओर आदर्शमूल्यों को नहीं ।

'अँधेरे का बेटा' नाटक में नाटककार ने मेजर नारंग के रूप में सैनिक के दोहरे व्यक्तित्व का चित्रण किया है । प्रत्येक सैनिक एक और सैनिक होता है, दूसरी ओर साधारण मानव । साधारण मानव जिंदगी चाहता है, मौत नहीं और वह मानव की मूल प्रवृत्ति है, जो सैनिक में भी हो सकती है ।

मिलिट्री के सैनिक जीवन के ग्लैमर की कायल निरूपमा जान-बुझकर लंबे-तगड़े स्मार्ट एवं बहादूर मिलिट्री आंफ़िसर मेजर नारंग से विवाह करती है । वह हमेशा अपने पति को उसी ग्लैमर में देखना चाहती है जो प्रमोशन पर प्रमोशन प्राप्त करके एक दिन कर्नल बन जाये । मगर सन 1962 में चीनियों के साथ हुए युद्ध में लड़ते-लड़ते मेजर नारंग अपने अन्य साथियों को आगे करके स्वयूम पीछे हट जाते हैं । जिस में उनके अन्य दो साथियों की मृत्यु हो जाती है । इसी वजह से उनका सुपरसेशन होता है ।

सैनिक अपनी मूल यथार्थ वृत्ति की प्रबलता से कभी युद्ध भूमि से जान बचाकर भाग आता है तो समाज और पत्नी की निगाहों से गिर जाता है । पत्नी अपने पति को मौत जिंदगी से बेपरवाह रूप में देखती है और हर हालत में उनका प्रमोशन चाहती है । मगर जब पति का सुपरसेशन होता है, तब पत्नी द्वारा प्रताड़ित और उपेक्षित होने से उनका जीवन दुःख से भर जाता है और अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए युद्ध में लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त करता है ।

'न धर्म, न ईमान' नाटक में शर्माजी ने आदर्श प्रेम की वास्तविकताओं का परिचय एवं मानव हृदय में जलते प्रेम के दीये की क्षीण लौं पर शाश्वत आदर्श प्रेम के दर्शन कराये हैं । इस नाटक का नायक दिनेश और दया एक-दूसरे को जी जान से प्यार करते हैं । दिनेश और दया इस नाटक के देवदास ओर पारो है । नायक की त्रासदी यह है कि पारिवारिक परंपराओं के कारण वे एक-दूसरे को चाहते हुए भी विवाह नहीं कर पाते । पर जो एक-दूसरे के साँस और सपना थे, अलग होकर भी सचमुच अलग नहीं हो पाते, क्योंकि दोनों का प्रेम वास्तविक है, जिसका निर्वाह दिनेश अंत तक करता चलता है । जब दुनिया दया को मौत की घाटी में अकेली छोड़ देती है, तब दिनेश भी दया के बिना जी नहीं पाता, तो वे वह कदम उठाते हैं, जो देवदास और पारो ने भी नहीं उठाये । दिनेश का प्रेम

देवदास से भी ऊँचा है । यह नाटक परंपरागत प्रेम कथाओं की लीक से हटकर है । प्रस्तुत नाटक हमारे पारिवारिक संदर्भ से जुड़ा प्रेम और विवाह की समस्या का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता हुआ आदर्श प्रेम को रेखांकित करता है, जिसमें कोई जाति बंधन नहीं होती । उसमें तो पारस्पारिक दो हृदयों की मिलन की अभिलाषा रहती है ।

वर्तमान कालीन समाज के भ्रष्ट एवं रिश्वतखोर प्रवृत्ति के लोगों के शिकंजे से दूर रहते हुए भी अपने नैतिकवादी मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करनेवाले इन्कमटैक्स इंस्पेक्टर के रूप में 'चिराग़ की लौं' नाटक में किशोर की पात्र प्रधानता दिखाई देती है ।

प्रस्तुत नाटक का नायक किशोर आदर्शवादी, ईमानदार, कर्मठ, जनता के प्रति आस्था रखनेवाला, दायित्व का निवाह करने वाला, बनावट और दिखावे से दूर रहनेवाला, अपने गैरों से मिलने के कारण आत्मपीड़ित तथा अँधेरे के सीने में दागती हुई चिराग़ की लौं है । जयंत, रानी तथागिरीश तारा को बहकाते हैं और उसे रिश्वत लेने को प्रवृत्त करके किशोर के ईमानदारी को मिटाना चाहते हैं । मगर किशोर के ईमानदारी की लौं इतनी कच्ची नहीं थी कि जो ऐसे हवा के झोंके से बुझे । वह तो तूफान में भी न मिटनेवाली थी । जब तारा रिश्वत लेकर उसके ईमानदारी को कलंक लगाती है, तब वह अपनी धनलोभी पत्नी का साथ छोड़ देता है मगर मुल्यों, सिद्धांत और ईमानदारी को नहीं छोड़ता । इसके अलावा सशक्त चरित्र की दृष्टि से तारा, रानी, जयंत,गिरीश तथा नसीम का चरित्र महत्त्वपूर्ण है ।

अँधेरे का बेटा नाटक में मेजर नारंग मिलिट्री ऑफ़िसर होकर भी सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास करते हैं, असलियत छिपाने का प्रयास करते हैं, जो डरपोक है, जिन्हे अपनी गलती का एहसास होता है, पत्नी के कारण जीना मुश्किल हो जाता है और अंत में देश के लिए वीरगति प्राप्त करने पर गौरव का पात्र बननेवाले सैनिक के रूप में मेजर नारंग की पात्र प्रधानता सभी दृष्टियों से सार्थक हुई है ।

पति के रूप में मिलिट्री ऑफ़िसर की चाह रखनेवाली, बहादूरी पर नाज करनेवाली, सुपरसेशन होने पर हौंसला बढ़ाने का प्रयास करनेवाली, पति की अपेक्षा प्रमोशन को अधिक चाहनेवाली तथा अंत में देश के लिए वीरगति प्राप्त करनेपर गर्व महसूस करनेवाली पत्नी के रूप में निरूपमा की पात्र प्रधानता सार्थक सिद्ध हुई है । । गौण पात्र के रूप में संतोष, शबनम, सकीना, मीरा, कर्नल नगायंच तथा हुजूरासिंह की प्रधानता है ।

न धर्म, न ईमान नाटक प्रेम विवाह विषयक समस्या को लेकर लिखा गया है । प्रस्तुत नाटक का नायक दिनेश प्रचलित धर्म से संबंधित विवाह पद्धति की मान्यता पर विश्वास न रखकर उसके विरूद्ध आवाज उठानेवाले क्रांतिकारी युवक है । दिनेश , भावुक, भविष्य के सपने देखनेवाला, पुराने विचारों का विरोध करनेवाला, दृढ़ निश्चयी, दादी के बर्ताव से दुःखी होनेवाला आदर्श प्रेमी है ।

प्रेम के सामने दूर से भाई-बहन के रिश्ते के बंधन को, समान खून से उत्पन्न नस्ल की कमजोरी को और धर्मशास्त्र, रूढ़ी प्रथा एवं परंपरागत बंधनों को महत्त्व न देते हुए अपनी प्रेमिका दया के लिए अनेक दिनों तक अविवाहित रहकर देवदास की तरह उसकी प्रतीक्षा करनेवाले, बीमारी की अवस्था में उसे अपना खून देकर उसकी जान बचानेवाले और अंत में विवाहित दया का भी पत्नी के रूप में स्वाकार करनेवाले क्रांतिकारी युवक के रूप में दिनेश का चरित्र अन्य पात्रों में सभी दृष्टियों से सार्थक हैं । गौण पात्र के रूप में दया, दादी, चाची रामदयाल, दिनेश के पिता, पंडीत और डाक्टर का चरित्र महत्त्वपूर्ण है ।

शर्माजी के नाटकों में चित्रित आधुनिक युग की आम जनता को रोज मर्रा जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । इनके नाटकों में अनेक समस्याएँ दिखायी देती हैं - जैसे - सामाजिक समस्या तथा पारिवारिक समस्या । सामाजिक समस्या के अंतर्गत, आर्थिक, भ्रष्टाचार, नकाबी दुनिया की, निःस्वार्थी देश सेवकों की तथा बोगस अखबार की समस्याएँ दिखाई देती हैं ।

आर्थिक समस्या शर्माजी के नाटकों का प्राणतत्व है । इस अर्थाभाव के कारण ही छोटे - छोटे परिवार टूट रहे हैं । रिश्ते - नाते अपनेपन तथा सहकारिता की भावना नष्ट हो रही हैं । समाज में दिखावटी तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने की वृत्ति बढ़ रही है । रिश्ते - नाते खोखले बनते जा रहे हैं । समाज में भ्रष्टाचार की वृत्ति बड़े पैमाने पर पनप रही है । पग - पग पर भ्रष्टाचार ही दिखाई देता है । भ्रष्ट शासन व्यवस्था के कारण समाज में न्याय मिलना कठिन हो गया है । गरीब परिवार अन्याय-अत्याचार तथा शोषण के शिकार हो चुके हैं । पैसों के पीछे भागनेवाले इन भ्रष्ट अधिकारियों ने अपने ईमान तथा स्वाभिमान को अमीर लोगों के पास गिरवी रखा है । इसी कारण आज भ्रष्टाचार कम होने की अपेक्षा कँसर की बीमारी की तरह दिन-ब-दिन बढ़ता ही दिखाई देता है ।

आज आर्थिक विषमता के कारण पूँजीवादी वर्ग अधिक बलवान होता जा रहा है, और गरीब जनता अधिक गरीब । कमानेवाले अकेले व्यक्तिपर पूरा परिवार निर्भर होने के कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । परिणाम स्वरूप अर्थाभाव के कारण मनुष्य को गलत रास्ते अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है । आज नारी भी इससे दूर नहीं है, वह भी आज पैसा कमाने के लिए रिश्वत, चोरी तथा अनैतिक आचरण आदि को अपनाती हैं । इसका चित्रण 'चिराग़ की लौं' की तारा के माध्यम से दिखाई देता है ।

आज समाज में दोगले व्यक्तित्व को लेकर जीनेवाले लोग ही अधिक मात्रा में दिखाई देते हैं । उपर से जो सभ्य और सुंदर दिखाई देनेवाले चेहरे के भीतर असली चेहरा कितना घिनौना होता है, इसका चित्रण 'चिराग़ की लौं' नाटक में रानी, जयंत तथा गिरीश के माध्यम से दिखाई देता है । प्रस्तुत नाटक में चक्रवर्ती के माध्यम से बोगस अखबार के संपादकों पर व्यंग्य किया है । साथ ही इस नाटक में निःस्वार्थी देश सेवकों की समस्या भी दिखाई देती है, जो नसीम तथा किशोर के माध्यम से दिखाई देती है ।

शर्माजी ने अपने नाटकों में पारिवारिक समस्या के अंतर्गत अनेक समस्याओं को प्रस्तुत करके उसका हल भी बताया है - जैसे असफल प्रेम की समस्या, प्रेम के खोकले आदर्श की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, अविवाह की समस्या, विधवा समस्या, अंधविश्वास की समस्या तथा दांपत्य प्रेम की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन हुआ हैं। इन समस्याओं को अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि शर्माजी अपने नाटको में इन समस्याओं को उजागर करने में सफल हो चुके हैं । इन्होंने मानवी जीवन के विविध धरातल नुसार विभिन्न समस्याएँ चुनकर अपने नाटकों में संपूर्ण सजगता के साथ प्रस्तुत करने में प्रभावशाली रूप में सफल रहे हैं ।

जीवन में जिस प्रकार सुसंगति आवश्यक है, उसीप्रकार रंगमंचपर नाटक व्यवस्था तथा उसकी प्रस्तुति में सुसंगति आवश्यक है । रंगमंचीय नाटक एक सामुहिक कला निर्मिति है और उसका आस्वादन समूह द्वारा होता है । नाटक में नाटककार, अभिनेता, निर्देशक तथा अन्य रंग कर्मियों का योगदान रहता है । नाटकीय उपकरणों से ही नाटक सफलता से प्रस्तुत किए जाते हैं ।

शर्माजी के 'चिराग़ की लौं', 'अँधेरे का बेटा' और 'न धर्म न, ईमान' रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नाटक है । इन रचनाओं का सृजन करते समय नाटककार ने रंगमंच और अभिनय संबंधी पर्याप्त रंगनिर्देश दिये हैं । आंगिक, वाचिक, अभिनय के साथ सात्विक अभिनय के भी अनेक अवसर प्रदान किये हैं । नाटककार ने पात्रों के भावों और मनःस्थितियों को गहराई से व्यंजित किया है, जिससे रंगकर्मियों को अपनी भूमिकाएँ अदा करने में सहायता मिलती है । रूपसज्जा मंचपर एक वातावरण निर्माण करती है । रूपसज्जा विषयक आवश्यक रंग संकेतों के साथ दृश्य के अनुरूप तथा आर्थिक स्तर के अनुरूप परिवर्तित रूपसज्जा विषयक भी सूक्ष्म संकेत या निर्देश दिये हैं ।

विवेच्य नाटकों के मंचन के लिए चिराग़ की लौं और न धर्म, न ईमान के लिए दो प्रकार की तो 'अँधेरे के बेटा के लिए' एक ही प्रकार की दृश्यसज्जा आवश्यक है । लेकिन इस में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रथम प्रकार की दृश्यसज्जा में थोड़े परिवर्तन से दूसरे प्रकार की दृश्यसज्जा की जा सकती है । सरल दृश्य सज्ज इनकी विशेषतः है । नाटककार ने प्रकाश योजना का प्रयोग अंक तथा विभाजन के साथ वातावरण निर्मिति के लिए किया है ।

प्रकाश योजना के अंतर्गत रोशनी बुझाकर दृश्य समाप्ति, अँधेरे के साथ प्रकाश रोशनी, पुंजदीप प्रकाश योजना और रंगीन प्रकाश योजना को स्थान दिया है । नाटककार ने ध्वनि संकतों के अंतर्गत डाकिया की आवाज, घड़ी की आवाज, दस्तक, वेद मंत्र तथा मंत्रोचारण, दूधवाले की आवाज, टेलिफोन की आवाज, फायरिंग (गोली) की आवाज, जोर से हँसने की आवाज, जीप के रूकने की आवाज, बिजली की कड़क और बादल गरजने, बुलाने की, टेपरिकार्ड़र तथा चीखने की आवाज आदि का यथास्थान प्रयोग किया हैं । इससे नाटक में स्वाभाविकता आ गयी है । प्रसंग या घटना के अनुरूप संगीत की प्रत्यक्ष योजना मंचपर की गयी है । पार्श्वध्वनि और संगीत का सफल प्रयोग किया है । विवेच्या नाटकों में प्रयुक्त संवाद, पात्रानुकूल, भावानुकूल तथा व्यंग्यात्मक और अरबी, फारसी,उर्दू मिश्रित है । विवेच्य नाटक दर्शकीय संवेदना की झकझोर देनेवाले तथा दर्शक को प्रभावित करनेवाले हैं । चिराग़ की लौं और न धर्म, न ईमान की प्रथम प्रयोग दिल्ली के 'कला साधना मंदिर' में हुआ है । 'अँधेरे का बेटा' का प्रयोग अभी तक नहीं हुआ है । इस प्रकार शर्माजी के तीनों नाटक रंगमंचीयता और अभिनेयता की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट और सफल हुए हैं ।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि शर्माजी ने ऐसे जीवन सत्य को अपने समाज और परिवेश से प्राप्त किया है, जो किसी न किसी कोने से मानवीय हीत-अहित से जुड़ा हुआ है, उन्होंने अपनी नाटकों की रचनाओं में जीवन में यथावत विस्तार के साथ ही संवेदनाओं को देखना अधिक पसंद किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की उपलब्धियाँ -

रेवतीसरन शर्मा जी के 'चिराग़ की लौं', 'अँधेरे का बेटा' और 'न धर्म, न ईमान' नाटकों का अनुशीलन करने के पश्चात जो उपलब्धियाँ सामने आती हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. रेवतीसरन शर्मा के विवेच्य नाटक मूल्यों के संवर्धन में सहयोग करते हैं ।

2. रेवतीसरन शर्माजी के नाटक सुधारवाद और नैतिकता को बढ़ावा देते हैं ।

3. रेवतीसरन शर्मा के नाटक पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील मिलिट्री अफ़सर जो भूल मेजर नारंग ने की वह कभी नहीं करेगा ।

4. रेवतीसरन शर्मा के नाटक पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक अपने जीवन में नैतिक पतन से ऊपर उठने के सारे उपाय पा सकता है ।

5. रेवतीसरन शर्मा के नाटक पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक प्रेम विवाह में आनेवाली समस्याओं के सारे उपाय पा सकता है ।

6. विवेच्य विषय के अध्ययन की और एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है - रिश्वतखोरी का विरोध । विवेच्य नाटक पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक अपने जीवन में रिश्वत लेने की भूल कभी नहीं करेगा, बल्कि हर दम रिश्वत के विरोध में खड़ा होकर सामाजिक उत्थान में मद्दगार बनेगा ।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

रेवतीसरन शर्मा जी के साहित्य पर निम्न दिशाओं में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य किया जा सकता है -

1. रेवतीसरन शर्मा के नाटकों का कथ्यगत अनुशीलन ।
2. रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में सामाजिक चेतना ।
3. रेवतीसरन शर्माजी के नाटकों में मंचीयता ।
4. रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में प्रेम - भावना का अनुशीलन ।
5. रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में प्रतिबिंबित समकालीन समस्याएँ ।

वस्तुतः अध्ययन के दौरान नये विषय उभरकर आये हैं । यहाँ मेरे अपने विषय की सीमा है । भविष्य में आनेवाले शोधार्थी शायद उपर्युक्त विषयोंपर स्वतंत्र रूप से शोधकार्य संपन्न करे ।

[redacted] :